इकाई 9

घर एवं परिवार

इकाई की रूपरेखा

9.1 प्रस्तावना

9.2 घर एवं परिवार : अभिप्राय

9.3 भारत में संयुक्त तथा एकल परिवार

9.4 भारत में परिवार संबंधी दृष्टिकोण

9.5 सयुंक्त परिवार के विघटन की भ्रांति

9.6 परिवारिक संरचनाओं के प्रकार

9.7 परिवारिक संरचना में परिवर्तन

9.8 परिवार संबंधी परिप्रेक्ष्य

9.9 सारांश

9.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

अध्ययन के उद्देश्य

इकाई 9 का उद्देश्य भारत में परिवार को एक संस्था के रूप में देखना है और यह देखना है कि इस संदर्भ में सामाजिक शोध का क्या योगदान हो सकता है। इसी इकाई को पढ़ने के बाद आप:

- परिवार को परिभाषित कर सकेंगे और परिवार के प्रकार, संरचना एवं उसके गठन के अंतर को समझ सकेंगे;
- परिवार एवं घर में भेद कर सकेंगे;
- परिवार के संयुक्त एवं एकल रूप को समझ सकेंगे और यह पूछ सकेंगे कि क्या यह आवश्यक रूप से विकासात्मक रूप है (अर्थात् परिवार के एक मामले संदर्भ में आधुनिकीकरण पर शोधप्रबंध की जाँच कर सकेंगे);
- ग्रंथों और आनुभविक अध्ययनों में दर्शाए गए परिवार में अंतर कर सकेंगे;
- संयुक्त वं एकल परिवारों के संबंध में घर के विकास के चरणों की प्रक्रिया को जान सकेंगे;
- परिवार के प्रकार्यात्मक, विवाद, सत्ता और सांस्कृतिक आयामों का अध्ययन कर सकेंगे;
- भारत में समकालीन परिवार में आने वाले परिवर्तनों पर चर्चा कर सकेंगे;
- यह पूछ सकेंगे कि संस्था के रूप में परिवार का क्या कोई विकल्प है; और अंत में
- यह देख सकेंगे कि पारिवारिक अध्ययन ने सामान्यत: भारत में उच्च जाति के हिंदू परिवार पर ध्यान दिया है और अन्य समूहों में परिवार पर शोध के अभाव को पहचान सकेंगे।

9.1 प्रस्तावना

परिवार एक विशिष्ट संस्था है क्योंकि इसमें एक ही समय में निजी एवं सार्वजनिक संस्था मौजूद होती है। यह विभिन्न संदर्भों में अत्यंत अंतरंग एवं अत्यधिक सार्वजनिक के बीच में झूलता है।

परिवार लगभग सार्वभौमिक भी होता है। हम सभी लोग अधिकांश समय परिवारों में रहते हैं। परिवार की अत्यंत स्पष्ट एवं सार्वजनिक मौजूदगी ने इसके विषय में यह छवि बनाई है कि परिवार का समाजशास्त्र लचीला विषय है। अथवा यह इसके विपरीत भी हो सकता है कि यह इतना अंतरंग तथा निजी होता है कि इसे सामाजिक विश्लेषण के स्तर तक नहीं लाया जा सकता है। इन दोनों संभावनाओं में किसी के भी होने के बावजूद ओबेरॉय का मानना है कि सार्वजनिक होने के कारण प्रत्येक व्यक्ति परिवार पर अपनी राय दे सकता है और इस प्रकार इस पर चर्चा को गंभीरता से रोक सकता है। उन अंतर्भेदी भयों के विषय में जो परवार को आलोचनात्मक जाँच के प्रति अति संवेदनशील बना देते हैं, यह कहती है, "यह ऐसा है कि परिवार कि आलोचनात्मक पूछताछ, उस निजी क्षेत्र में भेदन हो सकता है जहाँ राष्ट्र के सर्वाधिक मूल्यवान सांस्कृतिक मूल्य प्रेषित तथा उत्पन्न होते हैं, और यह कि समाज का संपूर्ण तंत्र अव्यवस्थित हो जाएगा, यदि परिवार पर किसी भी प्रकार के प्रश्न उठते हैं अथवा उसे पुन: रचित करने का प्रयास किया जाता है।"

लंबी समयावधि के दौरान, सामाजिक दार्शनिकों ने संपूर्ण इतिहासकाल में, परिवार पर टिप्पणी की है। अपने प्रारंभिक काल में, परिवार समाजशास्त्र के अध्ययन का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है। आरंभिक ईसाई धर्म में परिवार को दिए गए उच्च दर्जे ने संभवत: उस काल में परिवार पर होने वाले अध्ययनों को प्रभावित किया है। ऐसा 20वीं शताब्दी में साठ के दशक के आंरभ में होता था। भारतीय संदर्भ में भी, लोकप्रियता और ध्यान केन्द्रित करने के विषय में पारिवारिक अध्ययन कई उतार-चढावों से गुज़रे हैं। परिवार केंद्रीय सामाजिक संस्था रहा है। यद्यपि, हाल में, 1950, 60 तथा 70 के दशकों की तुलना में, परिवार पर कम अपर्याप्त ध्यान दिया गया है। भारत में विवाह की सर्वव्यापकता के चलते, 20वीं शताब्दी के अंतिम दो दशकों में परिवार के अध्ययन पर कुछ कम ध्यान दिया गया है।

मानव शास्त्र में परिवार के अध्ययन में भी उतार-चढ़ाव आए हैं। विवाह और नातेदारी के साथ बंधे होने के कारण, वंश और मैत्री दोनों प्रकार से रिश्तों से संबंधित नियमों तथा व्यवहार की संरचना करने वाली संस्थाओं का वर्चस्व बढ़ गया (अधिक विवरण के लिए ओबेरॉय 1993 देखें)। हम जानते हैं कि ये सिद्धांत और नियम, नियमित रूप से, परिवार एवं घर से निकाल दिए जाते हैं। किसी कारण से, परिवार का यह आयाम, फोर्टे (1958) के इस विचार कि घरेलू समूह नातेदारी एवं विवाह की एक कार्यशाला है, के बावजूद कम महत्वपूर्ण हो गया। गॉफमैन (1958) के नाटकीय विचार का प्रयोग करते हुए, यह गंभीर रूप से विचारणीय है कि जीवन भर परिवार लोगों के व्यवहार के एक बड़े अंश का अंग होता है। सर्वव्यापी संस्था के रूप में, परिवार लोगों के जीवन रूपी नाटक का मंचन होते देखता है। परिवार के प्रति, इस प्रकार के अभिगम की नातेदारी के उन स्पष्ट सिद्धांतों के अंतर्गत आने की संभावना कम होती है जिनका, मानवशास्त्र अत्यंत रोचकता के साथ अध्ययन करता है। वह परिवार में व्याप्त मौजूदा क्लेष की तुलना अधिक व्यवस्थित श्रेणियों से संबद्ध होता है (समकालीन ब्रिटिश परिवार के क्लेष के विश्लेषण हेतु सिंप्सन 1994 देखें)।

परिवार के रोज़मर्रा की गतिविधियों में होने वाले बहुधा परिवर्तन, कुछ संरचनात्मक सिद्धांतों में स्वयं को ढ़ाल नहीं सके। इस कारण परिवार, पंरपरागत सरचंनात्मक मानव शास्त्र से दूर हो गया। फिर भी, यह एक ऐसा मंच है जहाँ पर लैगिकता तथा पारस्परिकता, क्रम-पंरपरा ओर विनिमय के संरचनात्मक सिद्धांत अभिनीत, नियंत्रित एवं उत्पन्न होते हैं।

यहाँ थोड़ा ठहरकर देखते हैं कि परिवार शब्द का अर्थ क्या है।

9.2 घर एवं परिवार : अभिप्राय

परिवार नामक अवधारणा का मुख्य रूप से अर्थ है पति-पत्नी इकाई (अभिभावक) एवं उनके बच्चों का प्राथमिक समूह। यह परिभाषा तीन प्रकार के संबंधों को ध्यान में रखती है। ये संबंध

हैं : पति-पत्नी का विवाह (अभिभावक) तथा बच्चों के बीच बहन-भाई के संबंध। ये दोनों संबंध अभिभावकों और उनके बच्चों के बीच वंश-विषयक संबंध से जुड़े हैं। (परिवार के अर्थ पर अधिक जानकारी के लिए आप इग्नू के बी.ए. पाठ्यक्रम के ईएसओ-12 की इकाई 6 देख सकते हैं।) हम नीचे देखेंगे कि कुछ परिवारों में ऐसे लोग होते हैं जो एक ही पुरुष अभिभावक के वंशज हैं, जबकि दूसरों में, एक ही अभिभावक के वंशज होते हैं। उदाहरण के लिए, पति-पत्नी, उनके विवाहित पुत्र, उनकी पत्नियाँ तथा बच्चे मिलकर वह प्राथमिक समूह बनाते हैं, जिसकी चर्चा, परिवार के रूप में, इस खंड के आरंभ में की गई है, यद्यपि यह थोड़ा बड़ा है। अत: विवाहित लोगों पर आश्रित लोगों के बची वंश विषयक संबंधों के प्रबंधन के मौजूदा सिद्धांतों के आधार पर परिवार छोटा या बड़ा हो सकता है। अत: परिवार, नातेदारी के सिद्धांतों पर आधारित होता है जिसके सदस्य एक ही आवास में रहते हैं। वे एक घर/क्षेत्र में रहते हैं। यह आवासीय इकाई घर कहलाती है। एक घर के सदस्यों के बीच संबंधों का समूह होता है। ये संबंध उनके स्थान तथा उससे जुड़ी उनके द्वारा निभाए जाने वाली भूमिकाओं से जुड़े होते हैं। घर एक आवासीय अथवा घरेलू इकाई है जिसमें एक या अधिक लोग एक छत के नीचे रहते हैं तथा एक रसोई/चूल्हे पर बना खाना खाते हैं। यह भी हो सकता है कि घर के सभी सदस्य हर समय घर में न रहते हों। भौगोलिक रूप से दूरस्थ घरों में भी एक परिवार के कुछ सदस्य रहते हैं। ये सदस्य दो या अधिक घरों में रहते हुए भी स्वयं को एक ही परिवार मानते हैं। घर एक सह-आवास समूह/इकाई होता है (एक सदस्यीय घरों वाले मामलों के लिए प्रावधान)। अत: रिश्तों एवं आवास के नियम परिवार और घर में भेद करते हैं (इन अवधारणाओं पर विस्तार से जानने के लिए और यह देखने के लिए कि घर किस प्रकार परिवार के विभिन्न आयामों में से एक है, शाह 1973, पृष्ठ 3 देखें)।

कोलेंडा (1998) एक और समाजशास्त्री है जिसने परिवार एवं घर से संबंधित अवधारणात्मक मुद्दों को स्पष्ट करने की दिशा में निरंतर कार्य किया है। उसने 1949 के बाद की 26 मानवजाति संबंधी अध्ययनों तथा घरेलू जनगणनाओं (कोलेडां 1968) के आधार पर भारतीय संयुक्त परिवार के अपने तुलनात्मक अध्ययन में 12-प्रकारीय स्पष्टीकरण योजना प्रस्तावित की है। प्राप्त घरेलू संयोजनों की ये श्रेणियाँ, पाठक को संयुक्त एकल अथवा विस्तृत प्राथमिक प्रकार के परिवारों के पार ले जाती हैं। यह योजना उस अवधारणा को उस प्रकार नहीं उलझाती, जिस प्रकार एक सरल संचुक्त बनाम एकल परिवार की तुलना उलझाती है। ये 12 प्रकार की श्रेणियाँ निम्न हैं : 1) एकल परिवार, अविवाहित बच्चों सहित अथवा उनके बिना दंपत्ति ; 2) संपूरित नाभिकीय परिवार ; 3) उप एकल परिवार ; 4) एक-सदस्यीय परिवार ; 5) संपूरित उप एकल परिवार ; 6) समानांतर संयुक्त परिवार ; 7) संपूरित समानांतर संयुक्त परिवार ; 8) वंशागत संयुक्त परिवार ; 9) संपूरित वंशागत सयुंक्त परिवार ; 10) वंशागत-समानांतर सयुंक्त परिवार ; 11) संपूरित वंशागत समानांतर संयुक्त परिवार ; तथा 12) अन्य, शेष श्रेणी (कोलेंडा की वर्गीकरण योजना के आलोचनात्मक विश्लेषण के लिए शाह 1973 : 220-227 देखें)। जीवन चक्र में सयुंक्त एवं एकल परिवारों में सतत भेदों को समझने के लिए घरों की श्रेणियाँ किस प्रकार उपयोगी हैं, इसके लिए इग्नू के बी.ए. पाठ्यक्रम के ईएसओ-12 की इकाई 6 देखें।

सोचिए और कीजिए 9.1

1) यदि संभव हो तो, भारत और गुजरात में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में 1951 में घरों के आकार के लिए ए.एम.शाह (1973) की पुस्तक के पृष्ठ 13 पर सारणी 3 देखें। निकटस्थ गाँव और/अथवा शहर में प्रत्येक गली के दस घर चुनिए तथा उनके आकार की एक सारणी बनाइए तथा 1951 के भारतीय जनगणना आँकड़ों की अपने आँकड़ों के साथ तुलना कीजिए। ग्रामीण तथा शहरी भारत और अपने राज्य के 1991 तथा 2001 के जनगणना आँकड़ों की शाह की पुस्तक में दिए गए आँकड़ों के साथ तुलना कीजिए।

2) घरों के संयोजन के आधार का पता लगाने के लिए शाह (1973) की सारणी 17 देखें। अब आप ग्रामीण तथा शहरी माहौल में बीस घरों से एकत्रित आँकड़ों के ऐसे संयोजन का आधार पता कीजिए।

अपने अध्ययन/परामर्श केंद्र पर, घरों के आँकड़ों ओर ढाँचों में आए अंतर पर चर्चा कीजिए।

9.3 भारत में संयुक्त तथा एकल परिवार

दो प्रमुख हिंदू रचनाओं, रामायण और महाभारत में केंद्रीय परिवार बड़े संयुक्त परिवार हैं। रामायण में दशरथ के पुत्र तथा महाभारत में धृतराष्ट्र और पांडु के पुत्र, अपनी-अपनी पत्नियों सहित जीवन का बड़ा भाग साथ रहकर बिताते हैं। हालातों के कारण अलग होने बाद भी, एक-दूसरे के प्रति चिंता, साथ रहने की आदर भावना और भावनात्मक लगाव दोनों रचनाओं में, परिवार की स्पष्ट दिखाई देने वाली विशेषताएँ हैं। दोनों रचनाओं ने भारत में हिंदुओं को अत्यधिक प्रभावित किया है तथा पुत्रोचित (पिता-पुत्र संबंध) निष्ठा वाला संयुक्त परिवार आदर्श माना जाता है। पारिवारिक एकता को जब कोई खतरा होता है अथवा पुत्रोचित निष्ठा के विषय में युवा पीढ़ी को जब याद दिलाना होता है तब इन परिवारों के उदाहरण दिए जाते हैं। अन्य लोगों के लिए रामायण के राम और सीता के पति-पत्नी के दपंत्ति को आदर्श माना जाता है क्योंकि इनके जीवन में पुत्रोचित निष्ठा का महत्व दांपत्य संबंधों से कम होता है।

(i) अभिभावक-पुत्र और (ii) भाई-बहन के बीच के दोनों संबंधों को वास्तविक जीवन में विभिन्न क्रमचयों और संचयों में पाया जाता है। इनके गठन के तरीके के संदर्भ में, ये संबंध एकल प्राथमिक तथा संयुक्त/विस्तारित परिवारों को अलग रहने में सहयोग देते हैं। एक एकल परिवार में एक पुरुष, उसकी पत्नी एवं अविवाहित बच्चे होते हैं। एकल परिवार में इनमें से किसी रिश्ते के अतिरिक्त रिश्तेदार जुड़ जाते हैं तो यह संयुक्त परिवार बन जाता है। अत: एकल परिवार के साथ पति और/अथवा पत्नी की तरफ के सभी रिश्तेदार एक घर में रहते है तो वह संयुक्त परिवार होता है। समाजशास्त्र/समाजिक मानव-विज्ञान में संयुक्त तथा विस्तारित शब्दों को एक-दूसरे के स्थान पर प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार का परिवार अभिभावक-बच्चे के संबंध के विस्तार पर आधारित एक से अधिक एकल परिवार का संयोजन होता है। इसका अर्थ यह है कि इसमें किसी एक लिंग के बच्चे और उनके जीवनसाथी एवं बच्चों का विस्तार भी शामिल हो सकता है यदि वंश को पुरुष की ओर से देखा जाता है, तो विस्तारित/संयुक्त परिवार पिता-पुत्र संबंध के विस्तार पर आधारित होता है। दूसरी और माता-पुत्री संबंध पर आधारित विस्तार माता के वंश पर आधारित विस्तारित संयुक्त परिवार होता है। भाइयों, उनकी पत्नियों और बच्चों के बीच अनुप्रस्थ रूप से विस्तारित परिवार को भ्रात्रीय अथवा समानांतर परिवार कहते हैं (वंशागत/अनुलंन और पार्श्व/अनुप्रस्थ रूप से विस्तारित परिवारों के उदाहरण के लिए पटेल 2005 में कपड़िया का निबंध देखें)।

एक आदर्श हिंदू संयुक्त परिवार में पुरुष उसकी पत्नी और उनके वयस्क पुत्र, उनकी पत्नियाँ एवं बच्चे और माता-पिता दंपत्ति के छोटे अविवाहित बच्चे होते हैं। इसे पैतृक वंशागत, (नवविवाहित दंपत्ति, पति के पिता के घर में रहता है) परिवार कहते हैं। सबसे बड़ा पुरुष घर का मुखिया होता है तथा प्राधिकार पीढ़ीगत रूप से आयु एवं लिंग के अनुसार भ्रात्रीय (भाइयों के बीच संबंध) संबंधों के अधीनस्थ माना जाता है। परिवार के सदस्य वंशागत अथवा समानांतर रूप से अथवा दोनों तरीकों से रिश्तों के संबंधो से जुड़े रहते हैं। जैसाकि इग्नू के बी.ए. पाठ्यक्रम के ई.एस.ओ-12 की इकाई 6 में विस्तार से बताया जा चुका है। संयुक्त परिवार को पीढ़ियों की संख्या, आदर्श रूप से तीन अथवा चार पीढ़ीदार परिवार के रूप में देखा जाता है (देसाई 1964, मदान 1965)। संयुक्त परिवार की संपत्ति एक होती है। यद्यपि पारिवारिक संपत्ति पर सभी समान अधिकार नहीं होता है। गोरे (1968) संयुक्त परिवार को वयस्क पुरुष साझेदारों और उन पर निर्भर लोगों के समूह के रूप में परिभाषित करता है अत: कुछ सदस्य परिवार

के सदस्य होने के बावजूद और आवास का तथा पारिवारिक संसाधनों का उपयोग होने का अधिकार के बावजूद साझेदार नहीं होते हैं। परिवार के विभिन्न सदस्यों को संपत्ति अधिकारों दोनों प्रकार की विचारधाराओं में – बंगाल और असम में दयाभाग तथा भारत के अधिकांश अन्य भागों में मिताक्षर) पर हम नारीवादी परिप्रेक्ष्य पर बात करते समय चर्चा करेंगे।

9.4 भारत में परिवार संबंधी दृष्टिकोण

भारत में परिदार पर शोध के लिए विभिन्न अभिगमों का प्रयोग किया गया है। सांस्कृतिक सत्य पर किसी भी ज्ञान के लिए पारिवारिक शोध विभिन्न दृष्टिकोणों से भी किया गया है। इस खंड की इकाई 12 में आप देखेंगे कि अनुभववादी सामाजिक शोध और सामाजिक मानव विज्ञान संबंधी शोध की तुलना में नातेदारी पर भारत-विद्या संबंधी अध्ययनों में भिन्न अभिगम का प्रयोग किया गया है। इसी प्रकार, भारत में परिवार पर भारत-विद्या तथा अनुभववादी अभिगमों के माध्यम से अध्ययन किया गया है। अब हम इन पर चर्चा करेंगे।

क) पाठ-विषयक दृष्टिकोण

हिंदू मत में परिवार का उद्‌गम पितृ-ऋण की अवधारणा से हुआ है। प्रत्येक व्यक्ति को संतानोत्पत्ति द्वारा अपने पूर्वजों का ऋण चुकाना पड़ता है (अन्य दो, शिक्षक तथा ईश्वर के प्रति हैं)। बच्चे का जन्म, विशेषकर पुत्र का जन्म होने मात्र के लिए नहीं अपितु पितृ-ऋण से मुक्त होने के लिए होता था। अगली पीढ़ी का पालन-पोषण करना, अर्थात पुत्रों को बड़ा करने व्यक्ति का स्वर्ग का मार्ग प्रशस्त होता था। अपने पिता की चिता को अग्नि देना तथा अन्य मृत्यु-संबंधी संस्कारों को पूर्ण करने का अधिकार एवं कर्त्तव्य, संतान के इसी ऋण को चुकाने तथा उससे बाहर निकलने को दर्शाता है। अतः अंतिम संस्कार (किसी व्यक्ति तथा उसके तीन तत्काल पूर्वज) के विनिमय के आपसी संबंधों द्वारा बंधा हुआ निकटतम समूह हिंदू परिवार कहलाता है। परिवार तीन अथवा चार पीढ़ियों का समूह था और इस पर निर्भर करता था कि किसे और कैसे गिना जाता है अथवा छोड़ा जाता है। श्राद्ध तथा संपत्ति परिवार की अवधारणा से जुड़े हुए थे। हिंदू परिवार का पाठ-विषयक आयाम संपत्ति-धारी और श्राद्ध करने की इकाई का आयाम है। हिंदुओ के धार्मिक ग्रंथ, धर्मशास्त्रों (केन 1930-62 देखें) में दर्शाए गए रिश्तेदार और विवाह की देशज पद्धतियों के साथ अंग्रेजों के उपनिवेशीय प्रशासन के माध्यम से हिंदू परिवार, भारतीय संयुक्त परिवार के साथ राह-अतंक हो गया। मैनी (1972) ने भारतीय संयुक्त परिवार को मानव परिवार के प्राचीन रूप के जीवित उदाहरण के रूप मे दर्शाया। उसने प्राचीन परिवार की रूपरेखाओं को, प्राचीन रोम पर विधि तंत्र तथा सामाजिक संस्थानों के प्रारंभिक स्वरूपों के सेल्टीक एवं स्लेविक जीवन में स्पष्ट रूप में दर्शाया है। मैनी के लिए, पैतृक वंश वाले परिवार निगम की तरह कार्य करता है तथा उसके सदस्य न्यासी की तरह। अनेक आंरभिक भारतीय समाजशास्त्रियों को भारत-विद्या अभिगम में प्रशिक्षित किया गया था। प्रभु (1955(1940)) ने संयुक्त परिवर के पैतृक वंश स्वरूप को अमीर, गरीब, शहरी लोग तथा ग्रामीण लोग, सभी हिंदुओं के पारिवारिक स्वरूप के रूप में बताया है। घूरे (1955) ने भारतीय संयुक्त परिवार के लिए भारतीय-यूरोपीय वंशावली का दावा किया। हिंदू परिवार ने काफी समय से स्वयं को आदर्श रूप में विश्लेषित, टिप्पणित एवं संस्तुतित पाया है। उच्च जाति तथा उच्च वर्गीय भारतीयों ने अपनी पारिवारिक नैतिकता और सिद्धांत पूजा-विषयक पाठों से प्राप्त किए हैं तथा अन्य जातियों के लिए, उनके संस्कृतकरण के दौरान, श्रीनिवास की अवधारणा का प्रयोग करते हुए, यह अनुकरणीय आदर्श बन गया। पूजा-विषयक अवधारणाओं का अंग्रेजों द्वारा लिए गए विधि संदर्भ में, पुनार्थ ने वैचारिक समागम को और भी जटिल बना दिया। "आनुवांशिक शिक्षितों की अपनी परंपराएँ, व्यवहार, पूर्वाग्रह तथा रुचियाँ थीं जिन्होंने उनकी टिप्पणियों तथा अर्थों को प्रभावित किया। यह पर्याप्त रूप से जटिल नहीं था कि अंग्रेजों के शासन के दौरान, भारतीय परिवार संगठन के विषय में कुछ विचार एवं भ्रांतियाँ, अंग्रेजी विधिन्यायालयों तथा न्यायाधीशों और अधिवक्ताओं की नई श्रेणी के माध्यम से, काफी फैल गई। (शाह 1973 : vii में श्रीनिवास की भूमिका)।

इतिहासकारों और समाजशास्त्रियों ने सामाजिक संस्थाओं पर टिप्पणी करने के लिए परिवार सहित पाठ-विषयक (साहित्यिक, धार्मिक तथा विधि) स्रोतों का प्रयोग किया (इस खंड की इकाई 12 देखें)। कार्वे (1953) ने रिश्तेदारी की शब्दावलियों के साथ भारतीय संबंध पद्धति पर अपने व्यापक सर्वेक्षण में भारत में चार मुख्य प्रकार की संबंध संस्थाओं की पहचान की है। कार्वे के अध्ययन ने द्रविड़ संबंध पद्धति तथा उसके पारिवारिक स्वरूप को भारत के अधिकांश भागों में मौजूद स्वरूप से भिन्न बताया। भारत-विद्या अभिगम के माध्यम से हिंदू संयुक्त परिवार आदर्श तथा प्राय: वास्तविक भारतीय परिवार माना जाने लगा (पारिवारिक अध्ययनों पर भारत-विद्या अभिगम के विस्तृत विवरण के लिए ओबेरॉय 2000 देखें)।

चाहे वह रामायण का परिवार हो अथवा कोई उच्च जाति और उच्च वर्गीय हिंदू परिवार, न तो वर्तमान में और न ही अतीत में, बड़ा संयुक्त परिवार, भारत में सर्वव्यापी प्रकार का परिवार नहीं है। यह पुन: बताया जाता है कि संयुक्त तथा एकल परिवार भारत-विद्या विषयक सरंचनाए हैं। अनुभववादी सामाजिक मानवविज्ञानी तथा समाजशास्त्रीय अध्ययनों के माध्मय से क्षेत्र में प्राप्त परिवार, आदर्श संयुक्त परिवार की तुलना में बहुत अधिक भिन्न है।

ख) क्षेत्र-विषयक दृष्टिकोण

भारतीय परिवार के अध्ययनों पर अपना प्रभाव दिखाने में गूडी (1962) को कुछ समय लगा। यद्यपि, परिवार का अनुभववादी अध्ययन अब भी पूर्वी और पश्चिमी परिवारों के मूलभूत अंतर के प्रभाव में था और इस प्रकार के परिवार तथ्य बन गए क्योंकि अनुभववादी सत्य को दो में से किसी एक प्रकोष्ठ में रखना आवश्यक था। वास्तव में, 'घरेलू समूह' तथा 'घर' शब्द, परिवार का प्रक्रियात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं, जिसके कारण परिवार की जीवंत वास्तविकता समाजशास्त्रीय जाँच के निकट आ गई। हालांकि, अनुभववादी मामलों और वंशावली संबंधित प्रक्रिया के सही आँकड़ों को उपलब्ध करवाने की पहल रिवर्स (1906) में की थी, भारत में पारिवारिक अध्ययनों में, लगभग आधी शताब्दी तक वैधिक तथा पाठ-विषयक प्रभाव का वर्चस्व बना रहा। परिवार की देखी श्रेणी पर प्रवचन पर उपनिवेशीय प्रशासन तथा मानव विज्ञान का प्रभाव था।

बॉक्स 9.1 : एकल एवं संयुक्त परिवार

1950 के दशक से लेकर कम से कम तीन दशकों तक हालांकि, पश्चिम एवं भारत दोनों जगह समाजशास्त्र तथा सामाजिक मानव विज्ञान ने परिवार ओर उसके विभिन्न आयामों एवं पक्षों पर गहन शोध उपलब्ध करवाया, यह खेद की बात है कि भारत में अनेक समाज विज्ञान शोध विद्यार्थियों को उनके प्रतिवादियों से पूछना पड़ता है कि उनका परिवार नाभिकीय है अथवा संयुक्त। लोगों के मत भिन्न हो सकते हैं। उनके मत, परिवार और घर के अन्य सदस्यों के संबंध में अहं (पैतृक वंश वाले समाज में पुरुष का) के आवास के संदर्भ में, साथ रहने से लेकर अलग रहने तक हो सकते हैं। समाजशास्त्री का कोटिकरण जहाँ आवास के संयोजन से प्राप्त रचना से संबंधित है, लोगों कोटिकरण अहं के आवास की तुलना में घर और/अथवा परिवार के अन्य सदस्यों के संदर्भ पर आधारित है। घर अपने आप में संयुक्त या एकल नहीं होता किंतु विकासात्मक प्रक्रिया के दौरान, आगे बढ़ने अथवा पीछे जाने के कारण इनमें से कोई भी बन सकता है। उदाहरण के लिए, पैतृक वंशागत समाज में विवाहित पुत्र का अपने पिता के घर से बाहर जाना, पुत्र के घर को एकल बना देता है अथवा अलग कर देता है। ऐसा करने से, यह आवश्यक नहीं कि पिता का घर भी नाभिकीय हो जाए। घर में रहने वालों के साथ अथवा अलग रहने वाले व्यवहार को दर्शाने वाले इस पक्ष (संयुक्त अथवा एकल घरों में) की आगे और अधिक जाँच होनी है। यहाँ पर परिवार केवल एक संज्ञा नहीं है बल्कि एक विशेषण है जिसमें अभिनेता ओर एजेंट सम्मिलित हैं।

भारत में समाजशास्त्र और सामाजिक मानव विज्ञान के उद्गम के पिछले कुछ दशकों में परिवार पर काफी ध्यान दिया गया था। अपने व्यापक सर्वेक्षण में, दुबे (1974) ने बताया है कि जाति

के बाद पारिवारिक अध्ययनों को सबसे अधिक रुचिकर माना गया था। वह एक दिलचस्प इत्तफाक है और साथ ही तुलनात्मक अध्ययन का एक मामला है कि भारत की राजनीतिक स्वतंत्रता तथा भारतीय समाज-शास्त्रीय समाज के गठन के बाद, परिवार के समाजशास्त्रीय अध्ययन का, श्रीनिवास के अनुसार, पुस्तक प्रधान दृष्टिकोण से क्षेत्र-विषयक दृष्टिकोण में रूपांतरण हो गया। लगभग इसी समय पर, पाश्चात्य क्षेत्र पर अधारित मानव विज्ञान और समज विज्ञान संबंधी अध्ययन भी सामने आए (गूडी 1958, गूडे 1963)।

इन अध्ययनों से वैधिक तथ पूजा-विषयक आधरित भारत-विद्या विचारधारा के अध्ययनों में रूकावट आ गई। भारत में परिवार का अध्ययन, पाठ-विषयक भारत-विद्या से संदर्भगत हो गया। समाजशास्त्रीयों तथा सामाजिक मानव विज्ञानियों ने परिवार के उन मौजूदा स्वरूपों और संरचनाओं का अध्ययन करना आरंभ कर दिया जिसमें वे वास्तविक रूप से थे, न कि संपत्ति धारी तथा श्राद्ध करने वाले इकाई के रूप में परिवार का पुराना पाठ-आधारित स्वरूप। पूजा-विषयक और वैधिक पाठों का प्रभाव संयुक्त परिवार तथा उसमें आने वाले परिवर्तनों के अध्ययनों पर पड़ता रहा। पारिवारिक अध्ययनों के मूल्य और तथ्य के साथ आदर्श, नियामक तथा व्यवहारात्मक पक्ष की अतिछादन तब तक जारी रहा जब तक घर की अवधारणा ने स्वत: शोध निकाय के रूप में पारिवारिक समाजशास्त्र को इस दुविधा से बाहर नहीं निकाला (शाह 1973)। हिंदू, उच्च जाति, परिवार के उत्तर भारतीय आदर्श को भूल से, अत्यधिक प्रभावी मान लिया गया था। ऐसा कपाड़िया (1958) और दुबे द्वारा भारत में गैर-हिंदू दक्षिण भारतीय समुदायों पर किए गए आंरभिक अध्ययनों के बावजूद था।

ग) प्रक्रियात्मक दृष्टिकोण : घरेलू विकास के चरण

हमने पहले भी एकल तथा संयुक्त परिवार एक-दूसरे में परिवर्तित होने की निरंतरता के विषय में बताया है। परिवार पर इस प्रकार के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि परिवार कोई स्थाय संस्था नहीं है। यह विकासात्मक चक्र से गुज़रता है। यह चक्र एकल और संयुक्त परिवारों को एक-दूसरे से अंतर्संबद्ध करता है। आकार, संरचना और उसके सदस्यों के स्थान एवं भूमिकाओं में परिवर्तन के साथ, समय के साथ, परिवार का ढाँचा भी परिवर्तित होता है। अत: कोई परिवार न तो सदैव एकल रहता है और न सदैव संयुक्त। इसी प्रकार, सभी एकल परिवार एक जैसे नहीं होते और न ही सभी संयुक्त परिवार समान होते हैं। किसी भी समय में, एकल परिवार में एक या अधिक लोग हो सकते हैं। जब वह संयुक्त में परिवर्तित होता है तो इसमें कम से कम दो और प्राय: अनेक सदस्य हो जाते हैं। आप पहले ही कोलेंडा द्वारा किए 26 अध्ययनों में से विश्लेषित 12 श्रेणियाँ देख चुके हैं। विकासात्मक चक्र की यह प्रक्रिया घर एवं उसके विकासात्मक चरणों के शाह (1973) के अध्ययन द्वारा बेहतर हो गई है। किसी समयावधि के दौरान, कोई घर सदस्यों के जन्म, गोद लेने, विवाह, मृत्यु, तलाक या अलग होने के कारण बढ़ सकता है या कम हो सकता है अथवा दोनों हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, पैतृक वंशज समाज में विवाहित पुत्र का अपने पिता के घर से बाहर जाना पुत्र के घर को एकल अथवा अलग घर बना देता है। किंतु ऐसा करने से यह आवश्यक नहीं कि पिता का घर एकल हो जाए इसलिए किसी समय में समाज के पारिवारिक स्वरूप एक सदस्य से लेकर साथ रहने वाले एक बड़े समूह तक भिन्न हो सकते है। अत: घर शब्द का प्रयोग आवासीय समूह के लिए किया जाता है और परिवार शब्द का प्रयोग नातेदारी, भावनाएँ, रस्मों तथा वैधिक आयामों द्वारा संबंधित समूह के लिए किया जाता है। इसलिए घर शब्द के लिए शाह (1973) संयुक्त अथवा एकल का प्रयोग न करके सरल एवं जटिल शब्दों का प्रयोग करते है।

घर में प्रत्येक सदस्य का दूसरे सदस्य के साथ व्यवहार की संरचना जटिल होती है। घर में प्रत्येक सदस्य के लिए जीवन की आचार-संहिता होती है। समग्र रूप से किसी घर का विश्लेषण करने के लिए उस घर के सभी संबधियों को ध्यान में रखना होता है। 'विकासात्मक प्रक्रिया में ये संयोजनात्मक प्रकार भिन्न तथा अव्यवस्थित न होकर अंतर्संबधित होते हैं। प्रत्येक समाज में विकासात्मक प्रक्रिया के ढाँचे को तीन प्रमुख घटक प्रभावित करते हैं। पहला, जनसांख्यिकीय

घटक होता है जिसमें न केवल जन्म, व्यस्कता तथा मृत्यु शामिल होते हैं अपितु सदस्योंके लिंग, संख्या भी होती है। ये घटनाएँ उद्गम के संदर्भ में जन सांख्यिकीय होती है। जबकि व्यावहारिक रूप में ये सामाजिक होती हैं दूसरा घटक घर में रहने वाले विभिन्न संबंधियों से संबंधित स्पष्ट रूप से निर्धारित नियमों की श्रृंखला होती है तीसरा घटक घर में परस्पर संबंधो का ढाँचा होता है जो मुख्यत: घर में रिश्तेदारों के संबंधो से जुडी आचार-संहिता अथवा नियमों पर निर्भर करता है' (शाह 1973-81-81)। जब एक सरल घर परिवार के सदस्यों के जुड़ने से (जन्म अथवा विवाह द्वारा) जटिल हो जाता है तो इस प्रक्रिया को विलय कहते हैं। इसके विपरीत जब सदस्य कम हो जाते है (मृत्यु, बहिर्विवाह, प्रवसन द्वारा) तो कहा जाता है कि घर का विखंडन हो गया है। घर विलय तथा विखंडन और जुड़ने अथवा घटने की प्रक्रिया से गुजरता है और इस दौरान वह सरल तथा जटिल होता जाता है। प्रत्येक बार घटने से यह आवश्यक नहीं कि घर और परिवार एकल अथवा संयुक्त परिवार में परिवर्तित हो जाए।

सोचिए और कीजिए 9.2

हमने ऊपर देखा कि परिवार अपने आकार, संरचना तथा संयोजन के संदर्भ में स्थाई नहीं रहता है। वास्तव में यह विकास की अवस्थाओं से गुजरता है जो कि अग्रगामी अथवा प्रतिगामी हो सकती है। इसलिए घर एवं उसके विकासात्मक अवस्था की अवधारणा का शोध में स्वत: शोध का महत्व होता है।

अपने माता-पिता और अथवा दादा-दादी की मदद से कम-से-कम चार पीढ़ियों तक का अपने पारिवारिक वृक्ष का चित्र बनाइए। चित्र बनाने के लिए इग्नू के पाठ्यक्रम के ई. एस. ओ. -12 की इकाई 8 और 9 तथा इस खंड की इकाई 12 की मदद लीजिए। वह समय लिखिए जब आपका परिवार एकल था तथा चित्र में दर्शाई गई संपूर्ण अवधि में वह कब संयुक्त बन गया। यह भी बताइए यदि परिवार के कुछ सदस्य अलग घरों में रहते थे किंतु संपत्ति, रस्मों, प्रदूषण, भावनाओं आदि के संदर्भ में संयुक्त रहे हैं।

अपने अध्ययन केंद्र पर चर्चा कीजिए कि किस प्रकार आपके परिवार के विभिन्न घर बसे और किस प्रकार विभिन्न समयों पर पारिवारिक श्रेणियों के विभिन्न स्वरूपों में ये अस्तित्व में थे। इस अभ्यास में आप ये देख सकेंगे कि घरों को साधारण रूप से एकल तथा संयुक्त परिवारों में कोटिकृत करने से समयावधि के दौरान परिवारों के वास्तविक विकासात्मक चरण छिप जाते हैं। परिवारों में विखंडन तथा विलय होता है तथा यह उन घरों द्वारा दिखाई देता है जिनमें पारिवारिक सदस्य रहते हैं। इससे आपसी संबंधों के महत्व तथा परिवार एवं घर के संगठन के सिद्धांतो को समझने में सहायता मिलती है। अपने अध्ययन केंद्र में अपने शैक्षिक परामर्शदाता के साथ परिवार पर अनुभववादी शोध में घर की अवधारणा के महत्व पर चर्चा कीजिए।

भारतीय समाजशास्त्र में वह काल जिसमें पाठ-विषयक दृष्टिकोण से क्षेत्र-विषयक दृष्टिकोण में परिवर्तन हुआ आधुनिकीकरण तथा विकास के विचार के प्रभाव के साथ मेल खाता है। मुंबई, जैसा भी था, को औद्योगिकीकरण और आधुनीकीकरण का शिखर मान लिया गया और शिक्षित समुदाय को मार्गदर्शक। इसलिए मुंबई के परिवार को आधुनिकीकरण तथा औद्योगिकीकरण के प्रभाव का प्रमाण समझा जाने लगा। जैसा कि पटेल (2005) के निबंधों से स्पष्ट हो जाएगा। भारतीय परिवार पर महाराष्ट्र तथा गुजरात में सबसे अधिक ध्यान दिया गया और भारत के अन्य भागों में विशेषकर दक्षिण भारत में काफी कम ध्यान दिया गया।

9.5 संयुक्त परिवार के विघटन की भ्रांति

समाजशास्त्र में सामाजिक मानव विज्ञान के साथ वह एक-रेखीय विकासात्मक मार्ग बांटा जिस पर कालांतर में परिवार को चलना था। मानव समाज के उद्गम तथा प्रकृति पर उसके *एशियंट लॉ* (1861) में मैनी के विकासात्मक मार्ग का स्थिति से अनुबंध में प्रचलित परिवर्तन के रूप

में सार व्यक्त किया गया। मैनी के लिए प्रस्थिति से अनुबंध तक के स्थानांतरण को विवाह की संस्था में गति के माध्यम से देखा जा सकता है जिसका केंद्र परिवार एवं संबंधों (अर्थात स्थिति निर्धारण) से व्यक्तिगत चयन अर्थात् (ठिका निर्धारण) तक है। आगे आने वाला परिवार अंतत: एकल परिवार बन गया जिसमें वैवाहिक दिग्विन्यास मजबूत था जैसे इकाई एकल परिवार। उसने भारतीय संयुक्त परिवार में पैतृक वंशागत परिवार के प्राचीनत्म स्वरूप को पाया। बेकोफेन और एंजेल्स, मैनी के मत से असहमत थे क्योंकि उनका प्राचीन परिवार मातृ वंशज था। एंजेल पर मार्गन के पैतृक वंशज परिवार की संरचना की कल्पना का प्रभाव था। निजी संपत्ति की संस्था और पैतृक वंशज-एक विवाही परिवार के गठन के साथ स्त्री के गरिमा से ऐतिहासिक पतन को दर्शाने के लिए वह विख्यात था। फिर भी परिवार रूपी संस्था के विषय में अपने परिप्रेक्ष्य में वे सभी विकासात्मक बने रहे (संबंधित विस्तृत वर्णन के लिए, पटेल 2005 में जिमर मैन का निबंध देखें)।

हालांकि ओढ़े गए विकासवादी परिप्रेक्ष्य का आरोप खारिज होना था, एक अन्य विश्लेषणात्मक बात है जो संयुक्त परिवार के विघटन के शोध को बल देती है। स्वंतत्रता पश्चात् के भारत से संबंधित अनुभववादी जानकारी की बिना सवाल तीन अथवा चार पीढ़ीयों वाले पैतृक वंशागत हिंदू संयुक्त परिवार की आदर्श तथा पाठ विषयक छवि से तुलना की जाती थी। परिवार का ऐतिहासिक विश्लेषण आज के परिवार के अर्थों को उपलब्ध करवा सकता है जिसमें समाज द्वारा समग्र रूप से अनुभव किए जा रहा धीमी गति का रूपांतरण तथा संपूर्ण रूपांतरण होता है।

परिवार के गंभीर अनुभववादी अध्ययन, अधिक ध्यान से अवधारणात्मक तथा विश्लेषणात्मक श्रेणियों से संबंधित थे और संयुक्तता एवं उसके विभिन्न संदर्भो में अर्थो तथा विभिन्न रूपों जैसे मुद्दे उठाए थे। संयुक्तता के अर्थ और उसके निहितार्थो के प्रश्न पर आलोचनात्क जाँच हुई। दो प्रमुख समकालीन प्रभावों ने न केवल परिवार के क्षेत्र-विषयक दृष्टिकोण को प्रभावित किया बल्कि आगामी दशकों ने भारत में पारिवारिक अध्ययन किस प्रकार उभर कर आए। पहले, 20वीं शताब्दी तक, जनगणनाएँ अनेक पाश्चात्य देशों और उनके उपनिवशों में की गई। घर के आकार पर भारतीय जनगणना के आँकड़ों से पता लगा कि परिवार की पाठ-विषयक भारत विद्या संबंधी छवि की तुलना में भारतीय घर आकार में छोटे हो रहे थे। यह तीन-पीढ़ियों वाले संयुक्त आवासीय इकाई से कहीं अधिक छोटा था। दूसरे, विघटनशील यूरोपीय परिवार पर डेटा के साथ, इस डेटा का अर्थ परिवार सहित सामाजिक संस्थाओं पर विकासात्मक परिप्रेक्ष्य लिया गया था। इस दृष्टिकोण को भारत में प्राप्त जनगणना डेटा से भी समर्थन मिला। विकासशील लोगों तथा युरो-केंद्रीत लोगों के लिए भारतीय परिवार पर जनगणना डेटा तथा निष्कर्ष रोम तक जाने वाले सभी रास्तों के प्रमाण थे, अर्थात् एक विवाह और एकल परिवार अंतिम मंजिल थे। परिवार के आकार में धीमी कमी वाला समझा जाने वाला विकासात्मक पथ गलत है। लेस्लेट और वॉल (1972) ने अतीत में यूरोपीय परिवार के छोटे आकार को दर्शाया है और इसे ऐतिहासिक जनसांख्यिकीकारों का भी समर्थन मिला है। यूरोपीय तथा एशियाई परिवार के ऐतिहासिक अध्ययनों ने घटते हुए आकार की एक तरफ मान्यता तथा परिवार की बदलती हुई संरचना और विषय-वस्तु को चुनौती दी है (निल्क और नेटिंक 1984 तथा याना गिसाको 1979 देखें)। एकल परिवार और अमेरीकी औद्योगिक समाज के बीच तालमेल पर प्रचलित पारसोन्याई शोध प्रबंध, जिसे अन्य समाजों को अंतत: अपनाना है, केवल एक विकासात्मक शोध प्रबंध नहीं था बल्कि अन्य पारिवारिक ढाँचों का विवैधीकरण भी था। इस संबंध में आधुनिकीकरण शोध प्रबंध पर ओबेरॉय (2000-7-13) का अनुबोधक मूल्यांकन देखें।

विकासात्मक परिप्रेक्ष्य का अनुपालन किए बिना भी तुलनात्मक रूप में ऐतिहासिक विश्लेषण संभव है। वेबर (1975) की पुस्तक ***प्रोटेस्टेंट एथनिक एंड दि स्पिरीट ऑफ कैपिटलिस्म*** की पुस्तंक का केंद्र समाजों के प्रकार की पूरी श्रृंखला, जिसमें आधुनिक समाज को अंतिम नहीं माना गया था, न होकर आधुनिक समाज के उद्गम तथा उसके उद्गम की परिस्थितियों पर था। यद्यपि पारिवारिक परिवर्तन के एक-रेखीय विकासात्मक मॉडल को नहीं दोहराया गया किसी अर्थ में

यह मत निकट रूप से संबंधित था कि दंपत्ति तथा उनके बच्चों के साथ नातेदारों के संबंधों की वैवाहिक एकता इस तंत्र की संरचनात्मक आधारशीला थी। बच्चों के सामाजीकरण पर इसका अत्यधिक ध्यान विकसित औद्योगिक समाज के साथ संबंधित था। यह परिवार औद्योगिक समाज के प्रभुत्वशाली आर्थिक रूप की मांगों के साथ विशेष रूप से सहगामी था। विकासशील देश भी सहगामी रूप से व्यवहार कर रहे था। यह अति-सरल मान्यता संयुक्त परिवार के विघटन के शोध प्रबंध में दिखाई दे रही थी। इसमें गंभीर ऐतिहासिक आंकड़ों तथा वैचारिक विश्लेषण का अभाव था (देसाई के निबंध 2005 देखें)। यह मत कि बड़े परिवार तथा नातेदारों के समूह (यद्यपि वास्तविक रूप से नौकर अधिक सामान्य थे) यूरोप की अधिक अमीर उच्च श्रेणी में पाए जाते थे, भी गलत साबित हुआ। योजनाकारों तथा नीतिकारों द्वारा कल्पित मम्मी-पापा और बच्चों के आरामदायक परिवार को बहुत पहले ही वास्तविक न मानकर रूढ़िबद्ध घोषित कर दिया गया था। लेसलेट और वॉल (1972) ने ऐतिहासिक डेटा के आधार पर इसे यूरोपीय परिवार, विशेषकर ब्रिटिश समाज में दर्शाया था। ऐंडरसन (1980) इग्लैड में हाल ही के समय (1961-71) के लिए इसे दर्शाता है और कहता है कि किसी भी समय पर 40% लोग ऐसे घरों में रहते हैं जो इस ढाँचे के अनुरूप नहीं हैं। मात्रिक डेटा को सतही तौर पर देखने में, अर्थात, किसी समय श्रृंखला को बहुत कम समयावधि में देखना अथवा मात्रिक डेटा की आदर्श साथ तुलना करना अथवा घर के आकार ओर संयोजन के विषय में भारत में की गयी प्रारंभिक जनगणनाओं के बाद की प्रक्रिया में खतरा होता है। अनेक समाजशास्त्रियों विशेषकर देसाई (2005) तथा शाह (1973) ने जनगणना संबंधी डेटा पंर बहस की और अवधारणाओं तथा डेटा के अर्थों की विसंगतियों को दर्शाया/यद्यपि, शाह (1999) जनगणना डेटा को उसकी सीमाओं के बावजूद प्रभावी मानता है।

भारतीय अध्ययन सामग्री के संदर्भ में एकल परिवार की औद्योगीकरण के साथ उपयुक्तता स्पष्ट शोधप्रबंध नहीं थी। परिवार घर के अवधारणात्मक अंतर के बावजूद अन्य आयाम सुबोध बने रहे। पाश्चात्य् संस्कृति और पद्धतियों के भारतीय अनुपालन पर सिंगर का कार्य (1968) जो कि दक्षिण भारत के उद्योगपतियों के बीच निजी क्षेत्र को प्रभावित किए बिना और उसमें प्रवेश किए बिना सार्वजनिक क्षेत्र के लिए उपयुक्त बनने हेतु अत्यंत सुव्यवस्थित ढंग से किया गया था, ने पांरपरिक परिवार के मूल्यों तथा आदर्शों के लचीलेपन को दर्शाया। पाश्चात्य तरीकों में ढलना और फिर भी संयुक्त परिवार तथा जातिगत मूल्यों का समर्थन करना सिंगर के भारतीय औद्योगिक परिवार की विशेषता थी। यद्यपि सिंगर का कार्य औद्योगिक समाज और एकल परिवार के बीच पारसोनियाई का तालमेल का प्रत्यक्ष उत्तर नहीं है यह भारतीय परिवार के लचीलेपन का मजबूती से समर्थन करता है। दूसरी ओर संयुक्तता के मुद्दे को संयुक्त आवास के एकमात्र मापदंड से अलग कर दिया गया था। अत: संयुक्त रूप से रहे बिना परिवार की संयुक्तता को बनाए रखना संभव है। यद्यपि एकल आवास, बेटिली (1993) द्वारा कही गई शहरी भारत की नौकरीपेशा श्रेणी में बढ़ रहे हैं, उत्तर भारत में शर्मा (1986) तथा वातुक (1972) द्वारा किए गए क्षेत्र अध्ययन एक मित्र तस्वीर दर्शाते हैं। इनके अनुसार सयुंक्त परिवार की एक प्रशाखा है जो शहर में अलग रहती है तथा सयुंक्त परिवार के सदस्यों के लिए अध्ययन और शहरी कार्य में जुडने हेतु प्रतिरोधक का कार्य कर रही है। कालडेट (1962) और कपड़िया, मोरिसन के लेख तथा जाति और संयुक्त परिवार पर गोष्ठी (2005) ने हुए विचार विमर्श संयुक्त परिवार से एकल परिवार तक होने वाले पारगमत से संबंधित है।

नातेदारी केंद्रित परिवार तथा आवास केंद्रित घर के बीच के अवधारणात्मक अंतर से परिवार को सामाजिक आदर्श ओर सामाजिक तथ्य दोनों रूप में समझने की दृष्टि से अत्यधिक विश्लेषणात्मक स्पष्टता प्राप्त हुई। शाह (1998) ने दर्शाया कि पिछले कई दशकों में संयुक्त परिवारों का अनुपात यदि बड़ा नहीं है तो वह पहले जितना रहा है। कोलेंडा (1970) ने भी संयुक्त परिवार के अस्तित्व की लोकप्रियता को दोहराया। शाह (1973) के लिए घरेलू ढाँचे का नातेदारी वाला आयाम मात्रिक डेटा के सार्थक विश्लेषण के लिए आवश्यक है। नियमों तथा अंतर्संबंधों को छोड़ा नहीं जाना चाहिए।

9.6 पारिवारिक संरचनाओं के प्रकार

हम एकल तथा संयुक्त परिवारों के विषय में पहले ही चर्चा कर चुके हैं। भारत में अनुभववादी क्षेत्र अध्ययनों (शाह 1973, कोलेंडा 1987 और पटेल 2005 में निबंध) से, हमने यह सीखा है कि परिवार सरल ओर एकल घरों के विभिन्न श्रेणी के रूप ले लेते हैं। वंश के सिद्धांत पर आधारित पारिवारिक संरचनाएँ, विभिन्न प्रकार के परिवारों में भेद करती हैं। परिवार के दो मुख्य संरचनात्मक प्रकारों को हम देखते हैं।

i) पैतृक वंशागत परिवार

एक परिवार में संबंधियों के समूह के बीच नातेदारी के वंशागत तथा सहोदर वाले संबंध उसके संरचनात्मक गठन को दर्शाते हैं। पारिवारिक संगठन में नातेदारी की केंद्रीय कड़ी जब पिता और पुत्रों के बीच होती है तो परिवार पैतृक वंशागत होता है। हम ऊपर देख चुके हैं कि ऐसा परिवार एकल और/अथवा संयुक्त हो सकता है। एक संयुक्त पैतृक वंशगत परिवार, वंशागत अथवा पार्श्विक रूप से जुड़ा हो सकता है। हमने यह भी देखा है कि पैतृक वंशागत संयुक्त परिवार को किस प्रकार एक सामान्य भारतीय परिवार माना गया है। इस इकाई में दर्शाए गए अधिकांश अध्ययन, पैतृक वंशागत परिवार के अध्ययन हैं।

ii) मातृ-वंशगात परिवार

अब हम परिवार का एक वैकल्पिक प्रकार देखेंगे जो संरचनात्मक रूप से पैतृक वंशागत नहीं है। वंशगत तथा सहोदर संबंधों वाली रिश्तेदारी वाला परिवार जिसका मुख्य केंद्र माता-पुत्री का रिश्ता तथा वंश सिद्धांत होता है, मातृ-वंशागत परिवार कहलाता है। मातृ-वशांगत परिवार भी एकल अथवा संयुक्त हो सकता है और इसके सदस्यों के जीवन चक्र के आधार पर इसके विभिन्न घरेलू रूप हो सकते है।

दक्षिण भारत का संयुक्त परिवार, विशेषकर मातृ-वंशगत नायरों में, भारतीय पूजा-विषयक ग्रंथों के पाठ-विषयक और ग्रंथ-विषयक परिवार जैसा नहीं था। संपूर्ण दखिण भारत मातृ-वंशागत नहीं है। उत्तर भारत में गांव, गोत्रा तथा सपिंड विजातीय विवाह से अलग दक्षिण भारतीय परिवार का गठन दूर के भाई-बहनों तथा मामा-भाँजी विवाहों से प्रभावित होता है। पैतृक वंशागत पर आधारित नम्बूदरियों (इल्लभ) के संयुक्त परिवार से अलग, नायर परिवार (*तारावड़*) मातृ-वंशागत था। कुछ मामलों में दक्षिण भारत का पैतृक वंशागत परिवार, उत्तर भारत के ऐसे परिवार से भिन्न होता है। केरल में नायरों के बीच परिवार के गठन में भेद होते है उदाहरण के लिए दक्षिण-पश्चिम के केरल और तथा उत्तर केरल के बीच। मालाबार और ट्रेवेनकोर में बहुपति प्रथा के कारण अंतर था। फिर भी तारावड की संस्था शक्शिाली थी। दुबे (1974) की समीक्षा मातृ-वंशागत तंत्रों और उसके भीतर भारतीय तथा गैर-भारतीय विद्वानों के परिवारों के अध्ययन पर गहन कार्य दर्शाती है। सारदामोनी की नवीनतम पुस्तक (1999) ट्रेवेनकोर से संबंधित है जो पुथेनकलाम (2005) द्वारा बताया गया एक क्षेत्र है। दोनों तारावाड़ से संबंधित है और इसे मातृवंश की केंद्रिय विशेषता के अतंरंग रूप से संबंधित प्रभाव को दशार्ते है। भातृ वंश की पंरपरा स्त्रियों को कुछ अधिकार देती है जैसे अपनी माता के घर में (तारावंड) रहने और देख-रेख का स्थाई अधिकार। तारावाड में स्त्रियों को प्राप्त अधिक स्वायत्तता मातृवंश का सिद्धांत और उसके फलस्वरूप होने वाले तारावाड़ का गठन, दोनों को दशार्ती है। बहुपति प्रथावादी संघ, पतियों के पास जाना रीतिपरक रूप से प्रदत्त नम्बूदरी पति और इन पतियों के बच्चे *तारावाड* की विशेषताएं थे। *तारावाड* के सदस्य 20 से 30 तक अथवा अधिक होते थे। यह पारिवारिक तंत्र कुछ जटिल था तथा इसे पैतृक वंशागत परिवार के साथ मिलने में कुछ परेशानी हुई थी।

मातृवंश, पितृवंश का विलोम नहीं है इसलिए यह परेशानी है। लैवी-स्ट्रॉस (1971) दक्षिण भारतीय नायर परिवार को कभी-कभी परिवार मानते हैं और अन्य परिवारों की भांति इसे

समूह के रूप में नहीं देखते है। यह मामला तब सुलझता है जब वह यह बताते है कि सामाजिक स्तर पर परिवार उन प्राकृतिक आवश्यकताओं से उत्पन्न होता है जिनके बिना समाज का होना संभव नहीं है। दूसरी परेशानी भारतीय परिवार के स्वरूपों में अंतर के कारण होती है जो औद्योगिक पाश्चात्य जगत नाभिकीय परिवार के साथ आसानी से मेल नहीं खाते थे। हॉलाकि पुथेनकलाम (2005) केरल के नायरों में मौजूद मातृ-वंशागत संयुक्त परिवार (*तारावाड़*) को देखने का अवसर देता है फिर भी तारावाड़ की संस्था धीरे-धीरे कमजोर हो गई जैसा कि पुथेन कलाम ने उपनिवेशीय शासन के दौरान बताया है (इस रूपांतरण पर अधिक जानकारी के लिए सारदामोनी (1999) देखें)। यह दावा करना कठिन है कि क्या *तारावाड* का पतन मातृ-वंशागत संयुक्त परिवार के विघटन को दर्शाता है। ऐसा नहीं है कि *इल्लम* ने *तारावाड* का स्थान ले लिया है। यद्यपि *तारावाड़* के विघटन की प्रक्रिया के दौरान, स्त्रियों की स्वायत्ता कम हो गई है। नायर स्त्रियों की स्वायत्तता और अधिकारों में कमी से रिश्तेदारी की संरचना में भौतिकता के महत्व पर शोध प्रश्न लग गया है।

iii) जाति, समुदाय तथा परिवार संरचना

हमने पहले जाना कि भारत विद्या अभिगम ने उच्च जातियों में मौजूद पैतृक वंशागत संयुक्त परिवार को आदर्श भारतीय परिवार मान लिया था। इस पूर्वाग्रह के कारण गैर-पैतृक वंशागत और गैर-हिंदू समुदायों में भारतीय समाज में परिवार के संदर्भ में समस्य उत्पन्न हो गई थी।

चक्रवर्ती और सिंह (1991) ने पाया कि समग्र भारत में एकल परिवारों की संख्या संयुक्त परिवारों से थोड़ी अधिक थी। वास्तव में आकार में बड़ा होने के कारण संयुक्त परिवारों में रहने वाली जनसंख्या का अनुपात भी अधिक है। जनगणना आँकड़ों के आधार पर शाह (1998) ने दिखाया कि पिछले कुछ दशकों ने एकल घरों पर संयुक्त घरों का अनुपात घटा नहीं है। वह कहता है कि जीवनप्रत्याशा में वृद्धि और शहरी जीवन पर दबावों के कारण संयुक्त आवास के बढ़ने की संभावना है, जबकि विसारीया और विसारीया (2003) का अनुमान है कि इन्हीं कारणों से नाभिकीय परिवार बड़ सकते है। यद्यपि यह स्पष्ट है कि शहरीकरण के कारण परिवारों का एकलीकरण नहीं हुआ है।

विकासात्मक तथा यूरो-केंद्रीत पूर्वाग्रह इतना शक्तिशाली था कि अतीत में परिवार के बृहद संयुक्त रूप के निश्चित प्रमाण न होने के बावजूद, गूडे (1963) ने ऐसा दावा किया और यह भविष्यवाणी की कि परिवार, पाश्चात्य परिवार के स्वरूप को अपनाने की दिशा में बढ़ रहा है (गूडे के विश्लेषण पर विस्तारपूर्वक चर्चा के लिए ओबेराय 2000 : 10-13 देखें)।

यह अब स्पष्ट है कि अधिकांश हिंदुओं द्वारा पैतृक वंशागत हिंदू संयुक्त परिवार को आदर्श माना जाता है किंतु अन्य घटकों में भौगोलिक गतिशीलता के कारण केवल एकल परिवार वाले घर ही नहीं अपितु अन्य प्रकार के घरेलु सयोजनों में वृद्धि हुई है। शाह (1973) प्रवासियों और उनके आवासीय प्रबंधों के बारे में बताता है। शर्मा (1986) और वातुक (1972) ने क्रमशः हिमाचल प्रदेश और उत्तरप्रदेश में ग्रामीण परिवारों की रणनीति पर चर्चा की है जिसमें ग्रामीण परिवार का एक अंश शहर की ओर चला जाता है ताकि नौकरी, शिक्षा आदि द्वारा परिवारों को उच्च दिशा में ले जाने हेतु शहरी संसाधन सुलभ हो सके। इन दोनों अध्ययनों में ग्रामीण परिवारों, ग्रामीण तथा शहरी घरों के माध्यम से परिवार को अधिक से अधिक लाभ दिलाने हेतु आवासीय प्रबंध करते हैं ओर फिर भी संयुक्त परिवार की पद्धतियों से डिगते नहीं है। दोहरे आवास ढाँचे को अपनाकर (ग्रामीण तथा शहरीघर) ऐसा परिवार अपनी आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा प्रतीकात्मक पूँजी में वृद्धि करता है।

निम्न जाति के हिंदुओं में पाया गया है (कॉन सी.एस.डब्ल्यू.आई. 1974, शाह 1998, कोलेंडा 1987) की वे संयुक्त परिवार की पद्धति को नहीं अपनाते है। इसका अर्थ यह नहीं है कि वे संयुक्त परिवार को आदर्श नहीं मानते है। कॉन (1955) ने सेनापुर के चमारों में संयुक्त परिवारों के अभाव के लिए उत्तरदायी घटकों के बारे बताया है। विस्तृत वर्णन के लिए आप

इग्नू के बी.ए. समाजशास्त्र पाठ्यक्रम के ई एस ओ - 12 की इकाई 6 देख सकते है। मैं यह विश्वास के साथ नहीं कह सकता हूँ कि निम्न जातियाँ भी संयुक्त परिवार को आदर्श परिवार नहीं मानती है। निम्न जातियों में परिवार को जानने के लिए सावधानीपूर्वक शोध करने की आवश्यकता है, इसी प्रकार जनजातियों में परिवार, आदर्श, मानक तथा वास्तविक पर बेहतर जानकारी के लिए अध्ययन की आवश्यकता है। हालाँकि मुस्लिम परिवार पर कम से कम कुछ शोध हुआ है (अहमद 1967), भारत में गैर-हिंदू समुदायों में परिवार पर आँकड़ों की कमी है।

सोचिए और कीजिए 9.3

अपने क्षेत्र में पाँच निम्नजाति के और पाँच उच्च जाति के घर लीजिए। इन घरों के संयोजन पर एक सारणी बनाइए। इग्नू के बी.ए. समाजशास्त्र पाठ्यक्रम के ई.एस.ओ.-12 की इकाई 6 का 6.4 देखिए और जानिए कि क्या इन घरों के सदस्यों के अन्य समानांतरों जो (आपके द्वारा चुने गए) घरों में न रहते हों संयुक्त संपत्ति, सहयोग और भावनाओं तथा संयुक्तता की रीति के संदर्भ में संबंध है।

अपने अध्ययन केंद्र पर इन तुलनात्मक निष्कर्षों की चर्चा कीजिए।

9.7 पारिवारिक संरचना में परिवर्तन

भारतीय संयुक्त परिवार पर आधुनिकीकरण शोध प्रबंध के अनुप्रयोग से संबंधित शोध (पटेल 2005 भी देखें) द्वारा कुछ समयावधि में परिवार के आकार, संरचना और संयोजन में हुए परिवर्तन देखने को मिले । पटेल (2005) परिवार को नातेदारी तथा वैवाहिक मानकों एवं पद्धतियों की कार्यशाला के रूप में देखता है। बीसवीं शताब्दी की अंतिम तिमाही में परिवार में होने वाले परिवर्तनों पर बहुत कम अध्ययन हुए हैं। सामाजिक और संरचनात्मक परिवर्तनों ने परिवार के आकार और उसकी संरचना को प्रभावित किया है (संयुक्त परिवार में परिवर्तनों को प्रभावित करने वाले घटकों के लिए इग्नू के बी.ए. समाजशास्त्र पाठ्यक्रम के ई.एस.ओ.-12 की इकाई 6 देखें)।

1960 के दशक में नारीवाद की दूसरी लहर से अब तक परिवार को नारीवादी विद्वानों द्वारा कुछ संदेह से देखा जाता है। स्त्री श्रमिकों की भागीदारी में वृद्धि, लिंग संबंधी कानून, व्यक्तिगत नियम तथा अंतर्राष्ट्रीय प्रवसन और अन्य बातों के साथ नवीन प्रजनन तकनीकें तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी ने विकास की परिवार के साथ पारस्परिक क्रियाएं बढ़ी हैं। परिवार ने परिवर्तन का सामना किस प्रकार किया है ? क्या वह 'सांस्कृतिक पिछड़ेपन) शोध प्रबंध अथवा प्रतिरोधकता की दिशा में बढ़ा है; यह देखना अभी शेष है। पिछले दो दशकों में, एक ओर, कुल प्रजननशीलता दर में कमी आई है और दूसरी ओर, जीवन प्रत्याशा में वृद्धि हुई है। इससे पारिवारिक जीवन पर प्रभाव पड़ना निश्चित है। साथ-साथ, विदेशों की ओर गबन में वृद्धि हुई है जिसके कारण खालीपन हो गया है। वैवाहिक टूटन अर्थात् तलाक और साथ ही उच्च जातियों में, जहाँ ये पहले वर्जित था, विधवाओं तथा तलाकशुदा औरतों के पुनर्विवाह में भी वृद्धि हुई है। स्त्री के लिए आज अविवाहित रहना नई बात नहीं है। समाजशास्त्र में इस पर अभी तक गंभीरता से अध्ययन नहीं हुआ है कि परिवार इन परिवर्तनों से किस प्रकार निपटता है। मातृ-वंशागत समुदायों में परिवार में क्या हो रहा है ? भारत में परिवार, नातेदारी और विवाह तथा मातृ-वंशागत समुदायों में होने वाले परिवर्तनों के लिए जैन (1996) और सरदा मोनी (1999) देखें। परिवारों और घरों का निम्नलिखि सदर्भों में क्या होता है : (क) अंतर्जातीय विवाह, (ख) अंतर्धार्मिक विवाह, (ग) आर्थिक मुक्तिकरण तथा, (घ) धर्म परिवर्तन। इस पर अभी तक अध्ययन नहीं हुआ है कि इन संदर्भों का भारत में परिवार गठन पर क्या प्रभाव पड़ता है।

9.8 परिवार संबंधी परिप्रेक्ष्य

घर की अवधारणाओं, परिवार पर इसके विशेषाधिकार और इस संदर्भ में किए गए अध्ययनों को पढ़ने के बाद हम परिवार के सैद्धातिंक परिप्रेक्ष्यों को पढ़ेंगे।

i) व्यवहारवादी परिप्रेक्ष्य

छोटे शिकारी समूहों से लेकर बड़े औद्योगिक समाजों तक के 250 समाजों मे परिवार की संस्था के आधार पर, मरडॉक (1949) ने दो निष्कर्ष निकाले : यह कि एकल परिवार एक सार्वभौमिक संस्था है और यह समाज के लिए अपरिहार्य प्रक्रियात्मक समूह है। युद्ध के बाद के संक्रमण अवधि में, विख्यात समाजशास्त्री और समाज सिद्धांतवादी टैल्कॉट पारसन (1959) के समाज एवं परिवर्तन के विषय में सरंचनात्मक व्यवहारवादी और तुलनात्मक सिद्धांत ने एक सामाजिक परिवार के अलग होने, भिन्न होने तथा उसके विशिष्टीकरण को अमेरीकी समाज के उप-तंत्र के रूप में घोषित किया। उसने बढ़ते हुए युद्ध पश्चात विचार को भी नकारा कि घटती हुई लैंगिक नैतिकता और वैवाहिक टूटन के कारण अमरीकी परिवार का बिखरना निश्चित था। पारसन के अनुसार सभी समाजों मे परिवार के दो मूलभूत प्रकार्य अमेरीकी परिवार द्वारा किए जाएंगे। ये बच्चों का प्राथमिक समाजीकरण तथा जनसंख्या के वयस्क लोगों का स्थिरीकरण हैं। इस सदंर्भ में एकल परिवार और औद्योगिक समाज के बीच तालमेल के विषय में कहा गया। पारसन ने कहा कि अधिक विस्तृत रिश्तेदारी वाले समूह द्वारा किए जाने वाले कार्य औद्योगिक समाज में औपचारिक संस्थाओं द्वारा किए जाएंगे और उसमें वैवाहिक रूप से बंधा एकल परिवार भागीदार होगा। इस प्रकार परिवार के दो आवश्यक प्रकार्य किए जाते रहेंगे तथा अमेरीकी परिवार स्थिर बने रहेंगे। पारसन के लिए परिवार के वंशागत और सहोदर संबध उनके मूलभूत स्वरूप में बने रहे। बच्चों पर अभिभावकों की सत्ता और प्राधिकार तथा दंपत्तियों और पीढ़ियों के बीच अनिवार्य तथा अभिव्यक्त प्रकार्यों की मदद से एकल परिवार अपने मूलभूत कार्य करता रहा।

व्यवहारवादी परिप्रेक्ष्यों के समायोजित तथा सुव्यवस्थित दृष्टिकोण के चलते पारसन को पीढ़ीगत क्रम और अमेरीकी परिवार में काम का बंटवारा व्यवहारवादी लगा। दूसरे उसके लिए आदर्श मध्यमवर्गीय अमरीकी एकल परिवार, विकासात्मक प्रक्रिया की चरम सीमा तक पहुँच चुका था। पारसन के विकासात्मक परिप्रेक्ष्य को गुडे (1963) ने पारिवारिक ढाँचों में विश्वक्रांति पर अपने अध्ययन में अपनाया।

कुछ समय से व्यवहारवादी परिप्रेक्ष्य प्रचलन में नहीं है। श्वेत मध्यमवर्गीय अमरीकी परिवारों को आदर्श एकल परिवार मानने के लिए पारसन की आलोचना की गई। मॉरगन (1975) ने पारसन के परिवार में कोई वर्गीय, क्षेत्रीय, धार्मिक भेद नहीं पाया। मरडॉक की भांति पारसन भी परिवार को सार्वभौमिक मानता था। इसके अतिरिक्त, परिवार के किसी विकल्प की खोज नही की गई थी। इसके अतिरिक्त जैसा कि पहले कहा जा चुका है परिवार में अभिभावक-बच्चों के क्रम और लैंगिक भूमिकाओं में सामंजस्य था किंतु यह केवल आंशिक रूप से सत्य था। परिवार में तनाव और विवाद (वोगल और बैल) तथा शोषणपूर्ण संबंध लैंग (1971) होते है। लीच (1967) ने पाया है कि एकल परिवार के सदस्यों में एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक आवेश होता है।

2) टकराव परिप्रेक्ष्य

एंजेल्स की विख्यात रचना द स्टेट फैमिली एंड प्राइवेट प्रोपर्टी (1884 में सर्वप्रथम प्रकाशित) परिवार के विश्लेषण हेतु पहला मार्क्सवादी प्रयास था। पारसन की भांति एंजेल्स ने भी इतिहास के भौतिक अर्थ के साथ विकासात्मक अभिगम अपनाया। लैंगिकता और लैंगिक संबंधों पर प्रतिबंध और स्त्रियों के प्रजनन पर नियंत्रण को राज्य एवं निजी संपत्ति की उत्पत्ति से जोड़ दिया गया। एंजेल्स के कार्य में लैंगिकता और एक पत्नी वाले परिवार पर नियंत्रण में निकट का संबंध था

जो विभिन्न ऐतिहासिक रचनाओं, कल्पानाओं और मॉरगन (1871) के कार्य से लिया गया था। एक पत्नी परिवार पुरुष की प्रधानता पर आधारित था जिसका उद्देश्य परिवार को प्राकृतिक उत्तराधिकारी को सुनिश्चित करने के लिए गैरविवादित पैतृकता स्थापित करना था।

1960 और 1970 के दशकों में आई दूसरी नारीवादी लहर के दौरान मार्क्सवादी विचारों और नारीवाद के विवाह ने परिवार के संदर्भ में मार्क्सवादी अवधारणाओं का प्रयोग किया। पूंजीवाद की मूलभूत ताकतों में से एक के उत्पादक के रूप में नारी, श्रमिकों को प्रजनन और घर की चारदीवारी में बाँध दिया गया तथा उनके सहयोग के लिए कोई भुगतान नहीं किया गया। अन्य शोध के माध्यम से रोबॉथम (1973) ने विस्तार से बताया कि सर्वहारा वर्ग पर पूंजीवादी तथा छिपे हुए कर के लिए प्रजनन किस प्रकार छिपी हुई रियायत का कार्य करता है। बच्चों का पालन पोषण श्रमिकों को आय बाजार में मोलभाव करने से रोकता है। स्त्री पर अत्याचार और पुरुष के क्रोध के प्रति उसके समर्पण को सार्वजनिक क्षेत्र में श्रमिकों की मजबूरी पर उनके वैध क्रोध की अभिव्यक्ति के रूप में देखा जाता है।

परिवार की मृत्यु में डेविड कॉपर (1972) प्रजनन में आज्ञाकारी तथा समर्पित श्रमिक दल के लिए वैचारिक अनुकूलन डालता है। अत: मार्क्सवादी अर्थों में अभिभावकों के प्राधिकार को भी ऐसे मनुष्य पैदा करने का माध्यम माना जाता है जो पूंजीवादी समाज में क्रमिक सिद्धांत को स्वीकार कर लेंगे। परिवार पूंजीवाद के लिए सहयोगी संस्था के रूप में कार्य करता है। नारीवादी लोग प्रजनन को नारी पर अत्याचार का मुख्य स्रोत मानते है। संपत्ति अधिकार, बच्चों पर अधिकार और इस प्रकार के अन्य अधिकार परिवार में लैंगिक संबंधों से प्राप्त होते हैं (अग्रवाल 1994, 1997)। नारी मुक्ति के लिए और पुरुष के साथ समानता प्राप्त करने के लिए मातृत्व पर काबू पाना होगा। एवरिंधम (1994) नारी की स्वायत्तता के संबंध में (व्यक्ति निष्ठता के रूप में) 1970 के दशक से नारी की स्थिति में परिवर्तन का विश्लेषण करता हैं 'उत्पादन का घरेलू माध्यम, घरेलू इकाई और उसमें निहित पूंजीवादी समाज में नारी के शोषण पर डेल्फी (1970) का शोध प्रबंध है। पूंजीवादी समाज कुछ इस प्रकार कार्य करता है जिससे पारिवारिक विचारधारा तथा भावनाओं के माध्यम से नारी एवं परिवारों का शोषण होता है। उत्पादन के घरेलू माध्यम के जरिए उत्पादन के पूंजीवादी संबंधों का शोषणपूर्ण चरित्र भावुकता के पीछे छिपा रहता है।

3) सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

पारीवारिक अध्ययनों को 'परिवार' के ऊपर 'घर' को विशषाधिकार देने में अवधारणात्मक प्रगति के रूप में सफलता प्राप्त हुई जिसके कारण इस क्षेत्र में अधिक तीव्रता से अंतर्सांस्कृतिक तुलनात्मक शोध हुए है। जनगणना में घर शब्द की लोकप्रियता द्वारा संभवत: संख्यात्क संयोजन का दबाव सामने आया, जबकि संबंधों और पारिवारिक संगठन के सिद्धांतों पर कम ध्यान दिया गया। हाल ही में, परिवार के अन्य पक्षों ने शिक्षाविदों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है।

परिवार तथा विशेष रूप से संयुक्त परिवार की विचारधारा को समझने के प्रयासों के फलस्वरूप कुछ रोचक अध्ययन हुए है। परिवार में भावनाओं पर शोध को कुछ समर्थन मिला हैं। परिवार के विभिन्न सदस्यों के मूल्यों और मानकों तथा परिवार में सामंजस्यता के उद्देश्य से दूसरों के साथ व्यवहार पर (1998) ने टिप्पणी की है (अन्य समाजों पर अधिक विवरण के लिए लींच 1990 देखें)

भारत में प्रजनन के सिद्धांत परिवार में शक्ति अधिकार तथा उम्र और लिंग की आधिकारिता से संबंधित हैं (दुबे 1986, 1997) बीज तथा धरती की सर्वव्यापी प्रजनन अभिव्यक्ति पुरुष को सक्रिय तत्व मानती है, जबकि नारी को निष्क्रिय तत्व माना जाता है। वह परिवार के लिए प्रजननशील संसाधनों की असमान भागीदारी में निष्क्रीय तत्व है; एक माध्यम है (नेपाल में प्रजनन में लिंगो के भिन्न सहयोग के लिए डेल वेली 1993 देखें)। नेपाली माता को केवल एक

निष्क्रिय क्षेत्र नहीं माना जाता है बल्कि उसका सहयोग भ्रूण के कुछ अंगों को बनाने में होता है और पिता का महत्वपूर्ण अंगों को बनाने में। दुबे (1997) बच्चे की पहचान बनाने में माता का महत्व मानता है क्योंकि जातिक्रम में बच्चे को रखने के लिए माता और पिता दोनों की जाति आवश्यक होती है। अतिजातीय विवाह और अधोजातीय विवाह की पद्धतियाँ सपिंड विजातिया विवाह के नियमों की भांति माता-पिता के योगदान से संबंधित इस मान्यता से जुड़ी है। मातृ-वंशागत समुदायों में जैसे खासी, प्रजनन में भिन्न लिंगों के योगदान के विषय में यह मान्यता पैतृक वंशागत समाजों की मान्यता के विपरीत है (नोगब्री 1993 देखें)।

वंश सिद्धांत में, स्वीकृत ज्ञानात्मक चरित्र, मातृ वंशागत और पैतृक वंशागत, दोनों प्रकार के समाजों में, परिवार में किसी व्यक्ति के जीवन की अधिकांश अवस्थाओं में सामाजिक, प्रतीकात्मक, प्रजननशील तथा भौतिक अधिकारों में परिवर्तित हो जाता है (अग्रवाल 1994, ग्रे 1995, ओबेराय 1996, दुबे 1997, और पटेल 1994 देखें)। उत्पादन पर इसके प्रभाव का अध्ययन डायसन और मूर (1981), बासु (1992) द्वारा किया गया है। जीवन चक्र अभिगम के दौरान स्वयत्तता के संबंधित आयामों के लिए पटेल (1994 और 1999) देखें। मैत्री सिद्धांत का प्रचालन करने वाले समुदायों में लैंगिक भागीदारी की कुछ भिन्न समझ पायी जाती है (अधिक जानकारी के लिए ड्यूमोंट 1966 तथा इस खंड की इकाई 12 देखें)।

चैतन्य की संरचना के रूप में घर (नेपाली घरों के लोगों के दृष्टिकोण के लिए ग्रे 1995 देखें) और व्यक्तिगत लाभों (पटेल 1994) से ऊपर उसकी प्राथमिकताएँ, प्रतिदिन के जीवन स्वरूपों में परिवर्तित हो जाती हैं। त्रविक (1990) द्वारा दर्शाया गया प्रेम (तमिल में अप्पू) केवल उत्तेजक अथवा वैवाहिक प्रकृति का भाव न होकर समा... समग्र भाव है, जो पारिवारिक संबंधों में एक नवीन दृष्टिकोण प्रदान करता है (परिवार के अन्य सदस्यों के बच्चों से अधिक अपने शिशु के प्रति अभिव्यक्त लगाव पर नियंत्रण को पटेल (1994) में देखें)।

परिवार में समाजीकरण के संदर्भ में लैंगिक लोगों के सामाजिक प्रजनन के संबंध में दुबे (1988), चॉडोरो (1978) तथा गिलीगन (1982) भिन्न मत व्यक्त करते हैं। सेवा की विचारधारा, परिवार में स्त्रियों पर सेवाभाव का बोझ डालती है (डेली 1988)। राज्य कानून के स्तर पर, कल्याण के कार्यक्रमों की आलोचना होती है (रिस्यू और परलीवाला 1996)।

4) सहयोगात्मक - विवाद परिप्रेक्ष्य

हमने ऊपर देखा कि 1960 का दशक परिवार के संदर्भ में प्रपाठी था। असमान लैंकिग संबधों के साथ-साथ परिवार में प्रेम, दांपत्यता और दमन भी था। युद्ध-पश्चात् विकास परियोजना की आलोचनात्मक जाँच तब हुई जब नारीवादी अर्थशास्त्रियों ने राज्य नीतियों तथा विकास के कार्यक्रमों में विश्लेषणात्मक इकाई के रूप में परिवार पर अनुप्रयुक्त आर्थिक सिद्धांत की कुछ मान्यताओं की निरर्थकता को दर्शाया। परिवार को निर्दयी जगत में सुरक्षित स्थान के रूप में अथवा विघटन के कगार पर खड़ी संस्था के रूप में न देखकर पारिवारिक स्तर पर बोलीगत संबंधों को गंभीरता से पहचानने की आवश्यकता है। इकाई 11 में संयोगात्मक विवाद परिप्रेक्ष्य को हम विस्तार से जानेंगे।

9.9 सारांश

इस इकाई में आपने परिवार को संस्था के रूप में जाना है। यह एक विशिष्ट संस्था है क्योंकि इसमें निजी तथा सार्वजनिक विशेषताएं एक साथ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। परिवार कमोवेश, एक सार्वभौमिक संस्था है क्योंकि पूरे विश्व में हम सभी किसी एक परिवार के सदस्य हैं। परिवार की यह स्पष्ट तथा सामान्य मौजूदगी यह आभास देती है कि इसे कोई भी समझ सकता है और समाजशास्त्र में यह एक नग्य विषय है अथवा इसके विपरीत है इसलिए परिवार पर शोध प्रतिबंधों से भरा हुआ है क्योंकि इसमें संवेदनशील विवरण भी होते हैं।

यद्यपि पारंपरिक रूप से परिवार को महत्वपूर्ण माना जाता है और संपूर्ण इतिहास में सामाजिक दार्शनिकों ने इसकी प्रकृति को समझने के प्रयास किए हैं।

आपने परिवार और घर शब्दों के अर्थ तथा विवाह ओर नातेदारी के साथ इसके अंतर्संबंधों को जाना है। परिवार में एक प्राथमिक समूह होता है जिसमें पति-पत्नी की इकाई (अभिभावक) और उनके बच्चे होते हैं। घर एक आवास होता है जिसमें कोई परिवार अथवा परिवार का कोई भाग रहता है। परिवार रिश्तेदारी के सिद्धांतों पर आधारित होता है जिसके सदस्य प्राय: एक ही आवास में रहते हैं, जिसे घर कहा जाता है।

रामायण और महाभारत जैसे हिंदू ग्रंथों में वर्णित बड़े संयुक्त परिवारों के विषय में संक्षिप्त विवरण दिया गया है। इन ग्रंथों में वर्णित संयुक्त परिवार के आदर्श स्वरूप को भारत में अधिकांश हिंदू पसंद करते है। पिता-पुत्र संबंध की अवधारणाओं अर्थात् पिता और पुत्र के बीच के रिश्ते को अत्यधिक आदर के साथ देखा जाता है। रामायण का अनुपालन लोगों के लिए आदर्श है क्योंकि इसमें वैवाहिक संबंधों से अधिक पुत्रीय संबंध का महत्व है। आपने जाना कि (i) अभिभावक संतान और (ii) भाई-बहनों के बीच के दो संबंध विभिन्न संयोजनों में वास्तविक रूप से मौजूद होते हैं। यही वह तरीका है जिसके द्वारा एकल मूलभूत तथा संयुक्त/विस्तारित परिवारों में भेद किया जा सकता है।

भारत में परिवार पर शोध के लिए विभिन्न अभिगमों का प्रयोग हुआ है। सांस्कृतिक वास्तविकता पर ज्ञान की भांति, परिवार पर शोध भी विभिन्न दृष्टिकोणों से किया गया है। इस इकाई में आपने परिवार के पाठ-विषयक दृष्टिकोण तथा क्षेत्र-विषयक दृष्टिकोण को जाना। पाश्चात्य जगत और भारत दोनों जगह समाज-शास्त्र एवं सामाजिक मानव विज्ञान में परिवार पर शोध का 1950 से लेकर लगभग तीन दशक का इतिहास है। भारत के पारिवारिक अध्ययनों पर गुडी (1962) का प्रभाव पड़ने में कुछ समय लगा किंतु परिवार पर होने वाले अनुभववादी अध्ययन देशज और विदेशी दोनों प्रकार के परिवार के बीच के मूलभूत अंतर से प्रभावित रहे। यह एक तथ्य बन गया। यद्यपि 'घरेलू समूह' की अवधारणा तथा 'घर' के विकासात्मक चक्र ने परिवार का एक व्यवहारिक स्वरूप प्रस्तुत किया जिसने पारिवारिक संरचना और संयोजन की जीवंत वास्तविकता को समाज शास्त्रीय जाँच के करीब लाकर ध्यान आकर्षित किया।

आपने परिवार और नातेदारी के क्षेत्र में, भारतीय समाशास्त्रियों और सामाजिक मानव-विज्ञानियों के योगदानों के बारे में जाना। पारिवारिक अध्ययनों में अत्यधिक रुचि हुआ करती थी (दुबे 1974)। भारत में समाज-शास्त्र और सामाजिक मानव-विज्ञान के उद्गम के समय इसका महत्व जाति के महत्व के तुरंत बाद आता था। संयुक्त परिवार और उसमें होने वाले परिवर्तनों के अध्ययनों में पूजा-विषयक तथा वैधिक पाठों का प्रभाव दिखाई देता रहा। पारिवारिक अध्ययनों में आदर्श, नियामक और व्यवहारिक पक्ष का मूल्य और तथ्य के साथ अति छादन तक जारी रहा जब तक स्वत: शोध प्रणाली के रूप में घर की अवधारणा ने परिवार के समाजशास्त्र को स्वतंत्र नहीं कर दिया।

इस इकाई में 'घरेलू समूह' के प्रक्रियात्क पक्ष को उपलब्ध करवाने वाले 'घर' और उसके विकास के विस्तृत विवरण का आलोचनात्मक रूप से विश्लेषण किया गया है। प्रत्येक समाज में विकासात्मक चक्र की रचना को तीन मुख्य घटक प्रभावित करते हैं जैसे जन-सांख्यिकीय घटक, घर में विभिन्न संबंधियों के आवास से संबंधित स्पष्ट रूप से बताए गए मानक और सदस्यों के अंतर्संबंध। 'विलय' और 'विखंडन' की प्रक्रिया को समझाया गया है।

विकासात्मक शोध प्रबंध से संबंधित संयुक्त परिवार के विघटन की भ्रांति कि औद्योगिक समाज की विशेषता एकल परिवार है जबकि संयुक्त परिवार एशियाई समाजों की विशेषता है। अधिकांश समाज-शास्त्रियों ने परिवार के 'पैतृक-वंशागत' स्वरूप का अध्ययन किया है। हांलाकि कुछ अध्ययनों जैसे केरल के 'नायर' ने 'मातृ-वंशागत' परिवार पर ध्यान दिया है। दक्षिण भारत के संयुक्त परिवार, विशेषकर नायर जो 'मातृ-वंशागत' थे, भारतीय पूजा-विषयक ग्रंथों में बताए

गए पाठ-विषयक और ग्रंथीय परिवार से मेल नहीं खाते थे। दक्षिण भारत के मातृ-वंशागत तथा पैतृक-वंशागत दोनों, उत्तर भारत के पैतृक-वंशागत सयुंक्त परिवारों से भिन्न थे।

इस इकाई में पारिवारिक संरचना में आए परिवर्तनों के बारे में बताया गया है। परिवार को नातेदारी और विवाह के मानकों ओर पद्धतियों की कार्यशाला के रूप में देखा गया है। सामाजिक और संरचनात्मक परिवर्तनों ने परिवार के आकार और संरचना को प्रभावित किया है। 1960 के दशक में नारीवाद की दूसरी लहर के बाद परिवार के विषय में आपने नारीवादी विद्वानों के संदेहास्पद विचारों को पढ़ा।

अंत में इस इकाई में आपके लिए विभिन्न समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्यों की संक्षिप्त रूपरेखा दी गई है। ये प्रकार्यावादी परिप्रेक्ष्य, विवाद परिप्रेक्ष्य जिसमें परिवार पर नारीवादी विचार शामिल थे, सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य तथा सहयोगात्मक-विवाद परिप्रेक्ष्य है। अगली इकाई में आप सहयोगात्मक-विवादपूर्ण इकाई के रूप में घर के बारे में और अधिक जानेंगे।

9.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

एंडरसन, एम. (ई.डी.) 1980 (1971) *सोश्योलोजी ऑफ दी फैमिली।* पैंग्विन बुक्स: हारमोंडसवर्थ

चक्रवर्ती, सी., और ए.के.सिंह (1991) *हाऊसहोल्ड स्ट्रक्चर्स इन इंडिया।* भारतीय जनगणना, ओकेजनल पेपर वन। भारतीय जनगणना : नई दिल्ली।

दुबे, एल. (1974) *सोश्योलोजी ऑफ किनशिप,* पॉपुलर प्रकाशन मुंबई।

कार्वे, इरावती (1953) *किनशिप ऑर्गेनाइजेश्न इन इंडिया,* डक्कन कॉलेज मोनोग्राफ सिरीज: पुणे।